कालिदास के साहित्य में राष्ट्रीय एकता के स्वर

प्राप्तिः 23.02.26
स्वीकृतः 15.03.26

08

डॉ0 संदीप कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, (इतिहास विभाग)
विजय सिंह पथिक राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कैराना (शामली)
ईमेलः *sundeepsingh4285@gmail.com*

सारांश

महाकवि कालिदास एक महान साहित्यकार होने के साथ–साथ भारतीय राष्ट्रीयता के भी महान प्रवक्ता थे। उनका साहित्य राष्ट्र–प्रेम एवं राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। उन्होंने समस्त भारतीय भू–भाग को एक अखण्ड एवं अविभाजित इकाई मानकर उसका वर्णन किया है। कालिदास को भारत के कोने–कोने का ज्ञान था। इसी ज्ञान को उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता एवं राष्ट्र–प्रेम का संदेश देने का माध्यम बनाया। 'मेघदूत' में उन्होंने मेघ के मार्ग के माध्यम से भारत के सांस्कृतिक वैभव और राष्ट्र की अखण्डता का चित्र प्रस्तुत किया है। उन्होंने उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में केरल व तमिलनाडु तक और पश्चिम में सिंध से लेकर पूरब में बंगाल की खाड़ी तक समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधकर एक राष्ट्रीय राज्य की अवधारणा साकार की है। 'रघुवंश' में रघु के दिग्विजय अभियान के द्वारा उन्होंने एक अखण्ड राष्ट्र के रूप में भारतवर्ष का सटीक एवं प्रमाणिक चित्र खींचा है। कालिदास ने धर्म को भी राष्ट्रीय एकता का आधार बनाया है। पहले उन्होंने भारत में पूजे जाने वाले सभी देवी–देवताओं में एक मौलिक एकता स्थापित करके एक राष्ट्रीय धर्म की अवधारणा को जन्म दिया, फिर इस धार्मिक एकता को राष्ट्रीय एकता का आधार बनाया। उनके द्वारा वर्णित सभी नदी, पर्वत, सरोवर आदि राष्ट्रीयता का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने भारत के प्रमुख तीर्थों, उत्सवों व परम्पराओं के वर्णन द्वारा राष्ट्रीय एकता का निर्माण किया है। उनके ग्रंथों में चाहे वह भारत का भौगोलिक वर्णन हो, राजनीतिक, धर्म, कला, प्रकृति अथवा सांस्कृतिक वर्णन हो, सब में राष्ट्रीय एकता का ही भाव निहित है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीयता, अखण्ड राष्ट्र, धार्मिक एकता, सांस्कृतिक एकता, राजनीतिक एकता, भौगोलिक एकता

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.08

भूमिका–

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सबसे महान साहित्यकार हैं। उन्हें 'कवि कुलगुरू' कहा जाता है। कालिदास एक महान साहित्यकार होने के साथ–साथ भारतीय राष्ट्रीयता के भी महान व्याख्याता थे। उनके साहित्य की एक प्रमुख विशेषता जो उनको अन्य साहित्यकारों से अलग करती है, यह है कि उनके साहित्य में भारतीय राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रीय एकता का महान एवं कालजयी संदेश है। कालिदास एक राष्ट्रवादी साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने ग्रंथों में उत्तर से लेकर दक्षिण व पूरब से लेकर पश्चिम तक समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधा है। उनकी राष्ट्रीयता की भावना केवल भौगोलिक स्तर तक ही सीमित नहीं है वरन् इसका विस्तार सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक प्रत्येक स्तर तक है। कालिदास ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस को राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रीय एकता का जो संदेश दिया है वह अद्वितीय है। उनके ग्रंथों में चाहे वह भारत का भौगोलिक वर्णन हो अथवा समाज, राजनीति, धर्म या सांस्कृतिक वर्णन हो, सब में राष्ट्रीय एकता की भावना व्याप्त है।

प्राचीन काल में भारत केवल मौर्य काल को छोड़कर बाकी समय अनेक टुकड़ों में ही विभाजित रहा तथा भारत में राष्ट्रीयता की भावना का अभाव था। किन्तु कालिदास ने समस्त भारतीय भू–भाग को एक अखंड एवं अविभाजित इकाई माना। उन्होंने भारत की विविधता में उस एकता के दर्शन किए जहाँ विभिन्न क्षेत्र, विभिन्न धर्म एवं भिन्न–भिन्न परम्पराएँ मिलकर एक राष्ट्र का निर्माण करते हैं। कालिदास के ग्रंथ केवल साहित्य नहीं वरन् भारतीय जनों को एकता में बाँधने वाले सूत्र हैं। कालिदास ने भारतवर्ष को एक राष्ट्र के रूप में देखा तथा अपनी राष्ट्रीयता की भावना को अपने साहित्य में अभिव्यक्त करते हुए भारतीय जनमानस को अभिप्रेरित किया।

भौगोलिक एकता–

ऐसा लगता है कि कालिदास को भारत के कोने–कोने का ज्ञान था और इस ज्ञान को उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता का संदेश देने का भी माध्यम बनाया। उन्होंने हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तथा असम से लेकर अरब सागर तक समस्त भारतीय भू–भाग को एक राष्ट्र मानकर उसका वर्णन किया है। 'कुमार संभव' के प्रारम्भ में ही कालिदास लिखते हैं– ''भारत के उत्तर में पर्वतराज हिमालय पूर्वी सागर से पश्चिमी सागर तक इस तरह से फैला हुआ है मानो यह पृथ्वी को मापने के लिए मापदण्ड हो।'[1] यहाँ पूर्वी सागर से तात्पर्य बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिमी सागर से तात्पर्य अरब सागर से है। उन्होंने भारत की विभिन्न पर्वत श्रृंखलाओं तथा नदियों का बहुत सुंदर एवं सजीव वर्णन किया है। हिमालय और गंगा नदी के महात्म्य से कालिदास अभिभूत थे। अतः उन्होंने अपने ग्रंथों में इनका अनेक स्थानों पर वर्णन किया है। 'मेघदूत' का उत्तरार्द्ध तथा 'कुमारसंभव' की समस्त कथा हिमालय से ही संबंधित है।''कुमार संभव' का प्रथम सर्ग तो केवल हिमालय के ही गुणगान से भरा पड़ा है।''[2] विवाह के बाद भगवान शिव पार्वती के साथ मेरू, मन्दराचल व कैलाश आदि पर्वतों पर भ्रमण करते हैं।[3]

हिमालय, कैलाश, गंधमादन, मंदर, मेरू (उत्तराखंड) के अलावा महेन्द्र (उड़ीसा), विन्ध्याचल (मध्य भारत), आम्रकूट (महाराष्ट्र), मलय, देवगिरि, सह्य पर्वत, चित्रकूट व मैनाक आदि प्रमुख पर्वतों

का भी कालिदास ने वर्णन किया है। कैलाश पर्वत की सुंदरता का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। कालिदास ने कैलाश पर्वत को शिवजी–पार्वती का निवास स्थान माना है।[4] उन्होंने भारत की विभिन्न नदियों एवं उनके महत्व का रोचक वर्णन किया है, जिनमें प्रमुख नाम हैं– सिन्धु, गंगा, यमुना,[5] महाकोसी, सिप्रा, सरयू,[6] मालिनी, सरस्वती,[7] मंदाकिनी, रेवा, कावेरी,[8] व ब्रह्मपुत्र। 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में सिन्धु नदी का उल्लेख हुआ है।[9] 'कुमार संभव','रघुवंश' व 'मेघदूत' में अनेक बार गंगा नदी का वर्णन है।[10] 'मेघदूत' में ऐसा जान पड़ता है, उन्होंने जानबूझकर मेघ से लम्बे मार्ग की यात्रा कराई है, जिससे रामगिरि से लेकर कैलाश तक भारतवर्ष की नदी, पर्वतों, नगरों, तीर्थों आदि के सुंदर चित्र अंकित किए जा सके।[11] 'मेघदूत' में 'रामगिरि' से लेकर अलकापुरी तक मेघ का मार्ग इस प्रकार है[12]–

- रामगिरि (नागपुर, महाराष्ट्र)
- आम्रकूट (अनूपपुर, म०प्र०)
- विन्ध्याचल पर्वत
- रेवा नदी (म०प्र०)
- दशार्ण (विदिशा, म०प्र०)
- वेगवती नदी (बेतवा नदी)
- उज्जैन (म०प्र०)
- निर्विन्ध्या नदी (म०प्र०)
- क्षिप्रा नदी (म०प्र०)
- गंभीरा नदी (म०प्र०)
- देवगिरि पर्वत (म०प्र०)
- चर्मण्वती नदी (चंबल नदी)
- दशपुर (म०प्र०)
- ब्रह्मावर्त (राजस्थान)
- कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
- कनखल (हरिद्वार, उत्तराखण्ड)
- गंगा का उद्‌गम स्थल (गोमुख, उत्तराखण्ड)
- हिमालय क्षेत्र
- कैलाश पर्वत

कालिदास ने 'ऋतुसंहार' में भारतवर्ष की 6 ऋतुओं का सटीक वर्णन किया है– निदाघ काल, वर्षा ऋतु, शरत ऋतु, हेमंत ऋतु, शिशिर ऋतु एवं बसंत ऋतु।[13] कालिदास के लिए हिमालय केवल एक पर्वत नहीं है, वरन् भारतवर्ष के गौरव का प्रतीक है। इसी प्रकार उसके लिए भारत की नदियाँ राष्ट्रीय एकता और समृद्धि की प्रतीक हैं। उसने पर्वतों, नदियों व वनों आदि को राष्ट्र की आत्मा माना है। 'मेघदूत' में उन्होंने मेघ के मार्ग के माध्यम से भारत के सांस्कृतिक वैभव और राष्ट्र की अखण्डता का भी चित्र खींचा है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.08

'रघुवंश' के त्रयोदश सर्ग में राम ने लंका से अयोध्या तक की यात्रा कर कालिदास के दक्षिणी और उत्तरी भारत के चित्रण हेतु दूसरा अवसर प्रदान किया है।[14] इस सर्ग में कालिदास ने हिन्द महासागर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। उन्होंने भारतीय समुद्र तटों का मोहक चित्र प्रस्तुत किया है। राम–सीता की यात्रा के दौरान उन्होंने मलयाचल, पंपासर, गोदावरी नदी, पंचवटी, पंचाप्सर, नन्दीवन, चित्रकूट पर्वत, मंदाकिनी नदी, प्रयाग, ब्रह्मसर, सरयू व अयोध्या का वर्णन किया है।[15] अतः हम कह सकते हैं कि कालिदास द्वारा किया गया यह क्षेत्रीय वर्णन भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का माध्यम है।

राजनीतिक एकता–

'रघुवंश' में कालिदास ने रघु की दिग्विजय के संदर्भ में भारत के विविध प्रदेशों के संक्षिप्त किन्तु ध्वनि–पूर्ण चित्र अंकित किए हैं।[16] इस ग्रंथ में भारतीय राष्ट्रीय एकता के स्पष्ट एवं व्यापक दर्शन होते हैं। रघु के दिग्विजय अभियान के माध्यम से उन्होंने समस्त भारतवर्ष को उत्तर से दक्षिण व पूरब से पश्चिम तक राजनीतिक एकता के सूत्र में बाँधकर एक राश्ट्रीय राज्य या अखण्ड भारत के निर्माण का सपना साकार किया है। रघु की दिग्विजय के द्वारा उन्होंने भारतवर्ष की वैज्ञानिक एवं प्रमाणिक भौगोलिक सीमा का भी अंकन किया है जो कि अद्‌भुत एवं अद्वितीय है। 'रघुवंश' में रघु का जो दिग्विजय अभियान है वह इस प्रकार है[17]–

- पूर्वी सागर (बंगाल की खाड़ी)
- सुह्य देश (पूर्वी भारत)
- बंग (बंगाल)
- उत्कल एवं कलिंग (उड़ीसा)
- महेन्द्र पर्वत (उड़ीसा)
- पूर्वी समुद्रतट (पूर्वी घाट)
- कावेरी नदी क्षेत्र
- हिन्द महासागर
- मलय क्षेत्र (तमिलनाडू, केरल व दक्षिणी कर्नाटक)
- पाण्ड्य (तमिलनाडू)
- सह्य पर्वत (पश्चिमी घाट– महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू, केरल)
- केरल
- त्रिकूट पर्वत
- पारसीक (पहलव) राज्य क्षेत्र (पश्चिमोत्तर भारत–पाकिस्तान, पंजाब)
- यवन (यूनानी) राज्य (पश्चिमोत्तर भारत व पूर्वी अफगानिस्तान)
- कश्मीर
- सिन्धु नदी
- हूण राज्य (पश्चिमी भारत)

- कम्बोज (पाकिस्तान)
- हिमालय क्षेत्र (उत्तराखण्ड व हिमाचल प्रदेश)
- प्राग्ज्योतिष एवं कामरूप (असोम)

इस प्रकार रघु का विजय अभियान समस्त भारत–वर्ष को एकता में बाँधकर अखण्ड राष्ट्र का निर्माण करता है तथा भारत–वर्ष की उस वास्तविक सीमा का भी निर्धारण कर देता है जिसे न कभी मुगल प्राप्त कर सके और न ही अंग्रेज।

रघुवंश के ही सर्ग छः में इन्दुमती स्वयंवर के दौरान एक बार पुनः भारत के विभिन्न राज्यों एवं उनकी राजधानी का वर्णन किया गया है, जिसमें पुनः भारतीय राष्ट्रीयता परिलक्षित होती है। इन्दुमती स्वयंवर के दौरान वर्णित राज्य हैं[18]– विदर्भ (महाराष्ट्र), मगध (बिहार), अंग (बिहार), अवंति (म०प्र०), अनूप (म०प्र०), महिष्मती (म०प्र०), शूरसेन (मथुरा), कलिंग (उड़ीसा), पाण्ड्य (तमिलनाडु), उत्तर कोसल (उ०प्र०)।

रघुवंश में ही सिन्ध, गांधार, कारापथ, कुशावती का भी वर्णन आया है। राम सिन्ध का राज्य भरत को सौंप देते हैं तथा इसके बाद भरत गांधार को भी जीत लेता है। तक्षशिला एवं पुष्कलावती नामक राजधानी का भी उल्लेख रघुवंश में किया गया है।

धार्मिक एकता–

कालिदास ने अपने साहित्य में धर्म को राष्ट्रीय एकता का आधार बनाया है। उनकी दृष्टि में धर्म केवल पूजा, आराधना या कर्मकाण्ड नहीं था वरन् समाज व राष्ट्र को जोड़ने का माध्यम था। कालिदास ने अनेक देवी–देवताओं का वर्णन किया है, जिनमें वैदिक देवताओं से लेकर गुप्तकाल तक के देवी–देवता सम्मिलित हैं। उन्होंने उत्तर से लेकर दक्षिण तक, समस्त भारत में पूजे जाने वाले देवी–देवताओं का न केवल वर्णन किया है बल्कि उनमें एकता एवं तादात्म्य भी स्थापित किया है। इस प्रकार उन्होंने धार्मिक एकता स्थापित करके एक 'राष्ट्रीय धर्म' की अवधारणा प्रस्तुत की है तथा धार्मिक एकता को राष्ट्रीय एकता का आधार बना दिया है। उन्होने मुख्यतः जिन देवी–देवताओं का वर्णन किया है, वें हैं– इन्द्र, अग्नि, वरुण, सूर्य, यम, त्वष्टा, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, कुबेर, स्कन्द, मदन, पृथ्वी, पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती, अम्बा, शची आदि।

कालिदास ने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को एक ही ईश्वर के भिन्न–भिन्न रूप माना है। अर्थात् ये तीनों एक ही है। उन्होंने कुमार संभव में लिखा है–

एकैव मूर्तिर्विभिदे त्रिधा सा सामान्यमपां प्रथमावरत्वम्।
विष्णोर्हरस्तस्य हरि कदाचित् वेधास्तयोस्तावपि धातुराद्यौ।।[19]

शिव–पार्वती विवाह को भी कालिदास ने इन तीनों देवों में एकता स्थापित करने का माध्यम बनाया है। इस अवसर पर ब्रह्मा एवं विष्णु भी उपस्थित होते हैं। इसी प्रकार उन्होंने पार्वती लक्ष्मी एवं सरस्वती में एकता के दर्शन कराये हैं। उन्होंने प्रयाग, अयोध्या, गोकर्ण व पुष्कर आदि भारत के तीर्थ स्थलों का वर्णन करके राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया है। बारात लेकर पहुँचे शिव से विष्णु द्वारा नंदी बैल से नीचे उतारना धार्मिक एकता का ही संदेश है। अतः सभी देवी–देवताओं में एक मौलिक एकता की विद्यमानता से एक राष्ट्रीय धर्म का निर्माण होता है तथा यह राष्ट्रीय धर्म राष्ट्रीय एकता का आधार

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.08

बनता है। ''धार्मिक विश्वासों पर विवेचन करते समय वे पूरे उदार हैं और शैवेतर सम्प्रदायों का जिक्र भी पूरे सम्मान के साथ करते है।[20] उनके द्वारा शिव की स्तुति में विश्वात्मा का सिद्धांत प्रस्तावित हुआ है।''[21] विश्वात्मा का सिद्धांत भी राष्ट्रीयता का ही द्योतक है।

सांस्कृतिक एकता–

मेघ को दूत बनाकर उन्होंने सबसे अधिक भारतीय होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। भारतवर्ष के जन–जीवन में मेघ को क्या महत्व प्राप्त है, यह वे ही समझ सकते हैं जो ग्रामों में निवास करते हैं। मेघ भारतीय ग्रामीणों के लिए मित्र और देवता दोनों हैं। कालिदास ने मेघ–वर्णन के माध्यम से लोकमानस के साथ अपनी समरसता उत्पन्न की है। उसने भारतीय संसार का चित्र सुकुमार रेखाओं में खींचा है।[22] उन्होंने धर्म, दर्शन, समाज, राजतंत्र, शिक्षा आदि अनेक विषयों पर अपना मत निश्चित करके ग्रंथों में उनका उपयोग किया है[23] तथा इनको राष्ट्रीय एकता का संदेश देने का माध्यम भी बनाया है। कालिदास ने अपने ग्रंथों में भारत के उन सभी प्रमुख रीति–रिवाजों, परम्पराओं व उत्सवों आदि का वर्णन किया है जिनका राष्ट्रीय जीवन में बहुत महत्व था। उन्होंने विभिन्न संस्कारों का वर्णन किया है। बसंतोत्सव व देवोत्थान एकादशी[24] आदि राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित उत्सवों का वर्णन किया है। उनके साहित्य में भारत की विभिन्न कलाएँ सजीव रूप में प्रकट होती है। कालिदास की कला राष्ट्रीय कला है क्योंकि इसका संबंध उन तत्वों एवं मूल्यों से है जो भारत के राष्ट्रीय चरित्र का आधार है। कालिदास द्वारा वर्णित सभी मानवीय मूल्य भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे–आदर्शवाद, नैतिकता, प्रेम, आध्यात्मिकता, कर्त्तव्यपालन, त्याग आदि। उनके अधिकांश नायक–नायिका आदर्शवादी हैं।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कालिदास भारतीय राष्ट्रीयता के महान एवं अमर अग्रदूत हैं तथा उनका साहित्य भारतीय राष्ट्रीयता का दर्पण है। उन्होंने अपने ग्रंथों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को अमरत्व प्रदान किया है। उनके साहित्य में भारत–वर्ष के एक राष्ट्र के रूप में वास्तविक दर्शन होते हैं। उनके साहित्य में वर्णित राजनीति, धर्म, परम्पराएँ, उत्सव, भूगोल, कला आदि सभी भारतीय जनमानस को एकता में बाँधने के सूत्र तथा एक राष्ट्रीय राज्य का निर्माण करने के आधार हैं। कालिदास ने राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय एकता का वह महान संदेश इतने पहले ही दे दिया था जिसकी हमारे देश को आज भी आवश्यकता है।

संदर्भ

1. कुमार संभव, 1.1
2. वही, 1.1–1.5
3. वही, 8.22–8.24
4. वही, 7.30, 8.24
5. रघुवंश, 6.48
6. वही, 8.95

7. पूर्व मेघदूत
8. रघुवंश, 4.45
9. मालविकाग्निमित्रम्, 5.115
10. कुमार संभव, 1.15, 1.30, रघु०, 6.48, 8.95, पूर्व मेघदूत
11. तिवारी, रमाशंकर : महाकवि कालिदास, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन, वाराणसी, 1961, पृ0सं0–426
12. पूर्व मेघदूत
13. ऋतुसंहार, 1.1
14. तिवारी, रमाशंकर : महाकवि कालिदास, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन, वाराणसी, 1961, पृ0सं0–426
15. रघुवंश, सर्ग–13
16. तिवारी, रमाशंकर : महाकवि कालिदास, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन, वाराणसी, 1961, पृ0सं0–426
17. रघुवंश, 4.34–4.87
18. वही, 6.40–6.74
19. कुमार संभव, 7.44
20. उपाध्याय, भगवतशरण : कालिदास का भारत, भाग–2, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, 1955, पृ0सं0–141
21. वही, पृ0सं0–153
22. तिवारी, रमाशंकर : महाकवि कालिदास, चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन, वाराणसी, 1961, पृ0सं0–426
23. मिराशि, वासुदेव विष्णु : कालिदास, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, लाहौर, 1938, पृ0सं0– 334
24. पूर्व मेघदूत